



शब्द



(निहकलंक हरि शब्द भंडार चो)





सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान दी जै
 सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान दी जै
 सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान दी जै
 सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान दी जै
 सोहँ महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान दी जै



* १ *

साचा प्रभ साचा मीत ।
 गुरसिख साचे रसना चीत ।
 साचा प्रभ साची प्रभ की नीत ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 एका बख्शे चरन प्रीत ।



* २ *

पारब्रहम तेरी अचरज माया ।
 जोत सरूपी खेल खलाया ।
 आप अभुल्ल सभ जगत भुलाया ।
 निहकलंक कल जामा पाया ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 बेमुख जीवां सरब भुलाया ।



* ३ *

हिरदे वस्या प्रभ अबिनाशी ।
 आत्म दुबदा सारी नासी ।
 देवे दरस घनकपुर वासी ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 भगतां करे बंद खलासी ।

* ४ *

सोहँ साचा शब्द चलाया ।
 सोहँ साची धुन उपजाया ।
 सोहँ आत्म सुन खुलाया ।
 सोहँ रसना जप जप जीव,
 महाराज शेर सिंघ होए सहाया ।

* *



३

* ५ *

कर दर्शन मन भाए अनंदा ।
आत्म उपजे परमानंदा ।
गुरमुख साचे प्रभ साच सदा बखशिंदा ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
देवे दरस प्रभ गुणी गहिन्दा ।



* ६ *

सोहँ शब्द प्रभ देवे दात ।
सोहँ प्रभ साची करामात ।
सोहँ शब्द करे प्रकाश ।
जिओं दीपक अंधेरी रात ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
जन भगतां देवे साच दात ।



* ७ *

साचा प्रभ सदा सहाइक ।
देवे दरस सरब सुखदाइक ।
सरब जीआं दा साचा नाइक ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
गुरसिख तेरा सदा सहाइक ।

* ८ *

साचा प्रभ सदा संग साथ ।
जोत सरूपी त्रलोकी नाथ ।
प्रभ साचे दी साची गाथ ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
गुरसिख रक्खे सिर दे कर हाथ ।

* ९ *

साची दात प्रभ दर पाओ ।
आप आपणा माण गुआओ ।
साचा प्रभ सद रसना गाओ ।
कोट अपराध सरब मिटाओ ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
वर घर दर साचा पाओ । * *



* १० *

साचा प्रभ सच्च घर पाओ ।
 आत्म सँसा सरब मिटाओ ।
 एका ओट निहकलंक चरन रखाओ ।
 मदिरा मास मनो तजाओ ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 जोत सरूपी रिधे वसाओ ।

* ११ *

सरन आए जन होए निमाणा ।
 साची दरगाह मिले टिकाणा ।
 प्रभ अबिनाशी गुण निधाणा ।
 गुरसिख अंत एका जोत समाणा ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 गुरसिख साचे जोती मेल मिलाणा ।

* १२ *

जीव जंत प्रभ विच समाया ।
 बेमुखां जीवां दिस ना आया ।
 साचा प्रभ ना रसना गाया ।
 रसन विकार मदिरा मास कराया ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 कलजुग जीवां झूढे धन्दे लाया ।

* १३ *

साचा नाद प्रभ वजाए ।
 आत्म सुन्न खोल वखाए ।
 एका धुन आप उपजाए ।
 गुरमुख चुण प्रभ चरन लगाए ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 शरन पड़े की लाज रखाए ।

* १४ *

बापू तुहाडा गावे गाणा ।
 आदि जुगादी नौजवाना ।
 दाता गुरू श्री भगवाना ।

५



नाम निधाना देवे दान ।
दर आया करे परवान ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
लक्ख चुरासी विच्छों कर परवान ।



* १५ *

शब्द सुणाए तुहाडा बापू ।
त्रगुण मेटे तीनो तापू ।
सोहँ शब्द जपाए जाप ।
तन मन होया पाकी पाक ।
आपणे दरस दा खोले ताक ।
पूरा करे अज्ज दा वाक ।
तुसी मेरे मैं तुहाडी ज्ञात ।
लेखे लाई सभना रात ।
चरन प्रीती दे सुगात ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
सदा सहाई सिर रक्खे हाथ ।



* १६ *

बापू दी सुणो खुशखबरी ।
तुहानुं भगत बणाया जबरी ।
उत्तो वेखण तारे अंबरी ।
हेबो वेखे धरती अम्मड़ी ।
राम सीता राह तक्कण सुवंबरी ।
जन भगतां प्रभ ने लेखे लाई चमड़ी ।
दीन दुनी दी कीमत रही ना दमड़ी ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
सब दी आयू कीती लम्मड़ी ।



* १७ *

लेख चुका दे इक्क तों दो ।
जगत नालों कर निरमोह ।
तेरे जोगे जाईए हो ।
अंतम आत्म दे आपणी लो ।
कूड़ी किरिआ सब दे कोलों खोह ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
चरन प्रीती दे आपणी छोह । * *



६

* १८ *

भिन्नङ्गी रैण चाओ घनेरा ।
भगतां पाया भगवान घेरा ।
जन्म करम दा कर नबेड़ा ।
कोझां कमलां बन्न दे बेड़ा ।
चरन कवल रक्ख खुल्ला विहड़ा ।
सभ दा कट्ट चुरासी गेड़ा ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
सच्च दुवारे आया जेहड़ा ।



* १९ *

मालवे वाल्यो गावो शब्द,
सतगुर चरन सच्चि सरनाई ।
झगड़ा छड्डणा दीन मज़हब,
आत्म परमात्म लैणा प्रनाई ।
इक दूजे दा करना अदब,
सभ नूं समझणा भैण भाई ।
सतगुर मेला जगत नहीं बदन,
निरगुण निरगुण लए परनाई ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर,
जगत विकार विचो आया कड्डण,
फड़ बाहो पार कराई ।



* २० *

गुर चरन प्रीती साचा जोग ।
गुरमुख साचे आत्म रस भोग ।
देवे दरस प्रभ अमोघ ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
आत्म कट्टे हौंमे रोग ।



* २१ *

सतगुर कीती बुद्ध बिबेक ।
चरन प्रीती बख्शी टेक ।
भेव चुकाया एकम एक ।
मन कल्पणा कीती नेक ।

त्रैगुण माया ना लगगे सेक ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
स्वामी करे खेल अनेक ।



* २२ *

इक्को ध्यान हरि निरंकार ।
दोए जोड़ करो निमस्कार ।
मंगण आए चरन दुवार ।
अमृत भरे हरि भंडार ।
खोल दुवार मिटे अंधेर ।
वखाओ घर जित्थे वसे हरि निरंकार ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
मंगण आए जो जन दुवार ।

* २३ *

अमृत बूंद मुख चवाओ ।
तन कलेश सरब गवाओ ।
इक दरवेश घर साचे बण जाओ ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
कर दरस आत्म तृपताओ ।



* २४ *

घर मंदर मिले ढाकर सुवामी ।
पीया प्रीतम अंतरजामी ।
सतगुर साहिब सदा निहकामी ।
जनम जन्म दी पूरी करे खामी ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
लक्ख चुरासी गलो कट्टे गुलामी ।

* २५ *

गुरसिख मेरे सज्जणा,
उठ आ के दे दीदार ।
मेरा परदा किसे नहीं कज्जणा,
मैं होवां जगत खुआर ।
इक्को तेरे दर ते बैह बैह सज्जणा,
अठे पैहर रए खुमार ।



८



मेरा नाद तेरे दुवारे वज्जणा ।
दूजा सुणे ना विच संसार ।
तेरा दरस कर कर गुरसिख रज्जणा ।
आपणा रंग लए निवार ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर,
जन भगतां करे सच्च प्यार ।



* २६ *

शब्द मेरा एह निराला ।
सोहँ नाम सदा प्रितपाला ।
नाम मेरे दी एह वडिआई ।
पसू प्रेतो देव बणाई ।
किरतम नाम जपे जो मेरा ।
मातलोक विच होए ना फेरा ।
सदा अतीत सदा है जीता ।
महाराज शेर सिंघ रक्खया चीता ।



* २७ *

जोती नूर निहकलंक,
निरगुण आप अखवाया ।
आप वजाए आपणा डंक,
शब्द डंडा हत्थ उढाया ।
वेख वखाए राओ रंक,
ऊचां नीचां आप समाया ।
गुरमुख उधारे जिओं जन जनक,
जन जननी लेखे लाया ।
खेले खेल बार अनक,
कलजुग अंतम वेस वटाया ।
प्रगट होया वासी पुरी घनक,
घर मंदर आप सुहाया ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी जोत धर,
हरिजन साचे लए वर,
आप आपणा बंधन पाया ।



* *



६

* २८ *

निहकलंक हरि का नाओं,
ना मरे ना जाया ।
एका वस्त्रे सच्च गराओं,
नेहचल धाम सुहाया ।
ना कोई पिता ना कोई माओं,
बालक गोद ना किसे उढाया ।
ना कोई देवे ढंडी छाओं,
स्त्रि हत्थ ना किसे टिकाया ।
ना कोई करे बैढ न्याओं,
इक इकल्ला आप अखवाया ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी जोत धर,
निरगुण नूर करे रुशनाया ।



* २९ *

दुःख रोग उतरे सताप,
पूत सपूता वेख वखाईआ ।
रसन गौणा सोहँ जाप,
जुग जुग आप जणाईआ ।
लोकमात होवे वड प्रताप,
फुल्ल फल दए महिकाईआ ।
दरस दिखाए आपणा आप,
आप आपणे रंग रंगाईआ ।
आपे होए माई बाप,
गुरमुख बाल अंजाणे गोद उढाईआ ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी जोत धर,
रोग सोग देवे कट्ट,
जो जन रसना जेहवा जेहवा रसना हरि गुण गाईआ ।



* ३० *

हरि संगत हरि समाया,
हरि हरि रूप अपार ।
हर घट डेरा आपे लाया,
गुरमुख विरला पावे सार ।





कलजुग अंतम अंधेरा छाया,
 भरमे भुल्ला सब संसार ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 आप आपणी किरपा कर,
 निहकलंक नरायण नर,
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 हरिजन देवे नाम दान,
 अज्ञान अंधेर गवाया ।



* ३१ *

निहकलंक रख्या नाओं,
 हरि हरि खेल खलाया ।
 संबल नगरी सच्च गरांओं,
 आपणा आसण लाया ।
 आपे पिता आपे मांओं,
 आपे बाल उढाया ।
 आपे देवे ढंडी छांओं,
 हरिजन साचे मेल मिलाया ।
 देवणहारा ढंडी छाओं,
 हरि संगत तेरे सीस हत्थ टिकाया ।
 दो जहानी पकड़े बाहों,
 सच्चखंड दुवारा इक्क सुहाया ।
 फड़ फड़ हँस बणाए काओं,
 सतगुर तेरी वड वड्डिआया ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 आप आपणी जोत धर,
 निहकलंक नरायण नर,
 शब्द खंडा विच ब्रहमण्डां,
 आपणा आप चमकाया ।



* ३२ *

शब्द नाद हरि वज्जया,
 एका नाम जैकार ।
 सतगुर पूरा मातलोक हरि गज्जया,
 निहकलंकी जामा धार ।
 जो घड़या सो भज्जया,





ਥਿਰ ਰਹੇ ਨਾ ਕੋਈ ਸੰਸਾਰ ।
 ਜਨ ਭਗਤਾਂ ਰਕ੍ਖੇ ਲਜ਼ਜਾ,
 ਆਪ ਆਪਣੀ ਕਿਰਪਾ ਧਾਰ ।
 ਖੁਸ਼ ਹੋਯਾ ਦੇਸ਼ ਮਾਝਿਆ,
 ਸੰਬਲ ਨਗਰੀ ਧਾਮ ਨਿਯਾਰ ।
 ਆਪੇ ਜਾਣੇ ਆਪਣਾ ਕਾਝਾ,
 ਲੇਖਾ ਲਿਖੇ ਨਾ ਕੋਈ ਅਪਾਰ ।
 ਸ਼ਾਹੀ ਭੂਖ ਵਡ ਰਾਜਨ ਰਾਝਾ,
 ਫੜੇ ਸ਼ਬਦ ਟੇਜ ਕਟਾਰ ।
 ਗੁਰਮੁਖ ਮਾਰੇ ਵਾਝਾ,
 ਮਨਮੁਖ ਸੁੱਟੇ ਪੈਰ ਪਸਾਰ ।
 ਸੰਮਤ ਸੋਲਾਂ ਚਲਾਯਾ ਸਚਚ ਜਹਾਝਾ,
 ਸ਼ਾਰਾਂ ਹਾੜੀ ਹਰਿ ਵਿਚਾਰ ।
 ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ,
 ਆਪ ਆਪਣੀ ਜੋਤ ਧਰ,
 ਜਨ ਭਗਤਾਂ ਕਰਾਏ ਸਚਚ ਸ਼ੰਗਾਰ ।



* ੩੩ *

ਹਰਿ ਸੰਗਤ ਉਠ ਨੇਤਰ ਖੋਲ,
 ਆਲਸ ਨਿੰਦਰਾ ਜਗਤ ਗੰਵਾਂਝਿਆ ।
 ਸਤਗੁਰ ਸਜ਼ਜਣ ਆਯਾ ਕੋਲ,
 ਰੋਗ ਸੋਗ ਦੇ ਮਿਟਾਝਿਆ ।
 ਸਤਗੁਰ ਪੂਰੇ ਅਗੇ ਆਪਣੇ ਦੁਖੜੇ ਫੋਲ,
 ਦੁੱਖ ਸੁਖ ਵਿਚ ਸਮਾਝਿਆ ।
 ਆਪਣੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਆਪੇ ਘੋਲ,
 ਘੋਲੀ ਘੋਲ ਘੁਮਾਝਿਆ ।
 ਆਪਣੀ ਰਸਨਾ ਆਪੇ ਬੋਲ,
 ਮਹਾਰਾਜ ਸ਼ੇਰ ਸਿੰਘ ਵਿਘਨੁ ਭਗਵਾਨ ਵਡੀ ਵਡੁਝਿਆ ।
 ਨਿਹਕਲੰਕ ਵਜਾਯਾ ਠੋਲ,
 ਤਰਲੋਕੀ ਰਿਹਾ ਉਠਾਝਿਆ ।
 ਲਖ ਚੁਰਾਸੀ ਟੇਰਾ ਕੜੇ ਪੋਲ,
 ਪਰਦਾ ਉਹਲਾ ਰਹੇ ਨਾ ਰਾਝਿਆ ।
 ਜੋਤੀ ਜੋਤ ਸਰੂਪ ਹਰਿ,
 ਆਪ ਆਪਣੀ ਜੋਤ ਧਰ,
 ਹਰਿ ਸੰਗਤ ਰਿਹਾ ਜਗਾਝਿਆ ।



* *



* ३४ *

देवे दरस गुर गोपाला ।
 भगत जनां दा सदा रखवाला ।
 आदि जुगादि सदा प्रितपाला ।
 सोहँ देवे साची माला ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 आप सहाई सदा प्रितपाला ।



* ३५ *

विष्णु वंसी सिख आवे ।
 सच्च सतगुर दा दर्शन पावे ।
 चरन कवल करो प्रनाम ।
 तीन लोक प्रभ दा धाम ।
 विच अकाश जोत सरूप ।
 अनाद शब्द वजाए भूपा ।
 शब्द मेरे दी एह धुनकार ।
 सुण के सिख सी उधरे पार ।
 जो ना जाणे मेरा भाओ ।
 तिन ना मिले सच्च गुर दिओ ।
 गुर बिन कोई ना बंधन काटे ।
 आवे जावे विकार विच हाटे ।



* ३६ *

सोहँ शब्द प्रभ आप लिखवाया ।
 सतजुग विच प्रचलत करवाया ।
 बाकी सभ दा काल करवाया ।
 गुर संगत नू देवे दान ।
 सोहँ शब्द है मेरा नाम ।
 रिदे ध्याओ सरब सुख पाओ ।
 विच चुरासी फेर ना आओ ।
 नाम मेरे दी एह वडिआई,
 जिस सिमरत तिस तृखा लह जाई ।



* ३७ *

दिवस रैण जो मुझे ध्यावे ।
 सोवत जागत दरस है पावे ।

सोवत जपे जाग गुर पूरा ।
 दरस दखावे सदा हज्जरा ।
 सच्च सदा मेहरवान ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान ।



* ३८ *

झूठा जगत झूठी है रीत ।
 सच्चा सतगुर है सदा अतीत ।
 तिस नूं राखो सदा ही चीत ।
 गुर चरन संग जोड़ो प्रीत ।
 महाराज शेर सिंघ चलाई रीत ।
 सोहें शब्द दी सदा है जीत ।

* ३९ *

चरन कँवल प्रभ राखो प्रीत ।
 गुर पूरा है ढांडा सीत ।
 सदा अडोल सदा अतीत ।
 सोहें शब्द जगत है जीत ।
 झूठा संसार बालू दी भीत ।
 महाराज शेर सिंघ पतित पुनीत ।



* ४० *

हरि किरपा हरि जाणया,
 पारब्रहम गुर करतार ।
 हरि किरपा हरि पछाणया,
 निरगुण जोत शब्द अधार ।
 हरि किरपा हरि संगत माणया,
 मेल मिलावा सिरजणहार ।
 हरि किरपा खेल दो जहान्या,
 खेल खिलाए गिरवर गिरधार ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 आप आपणी जोत धर,
 जोती नूर करे परवान्या ।



* *

* ४१ *

तुम्हा सतगुर दीन दयाल,
 धुर मस्तक वेख वखाया ।
 हरिजन देवे जीआ दान,
 याचक मंगण जो जन आया ।
 एका राग सुणाए कान,
 सोहँ ढोला साचा गाया ।
 दीपक जोत जगे महान,
 अंध अंधेरा दए मिटाया ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 आप आपणी जोत धर,
 घर आपणा आप वखाया ।



* ४२ *

घर गृह मंदर होया पवित,
 पापी पतित तराईआ ।
 सच्च सुहन्जणी सुहाई थित्त,
 गुर सतगुर वड वडिआईआ ।
 लेखे लाए काया रित,
 रत्ती रत्त तुलाईआ ।
 शब्द शब्दी कर कर हित्त,
 लेखा लेख मिटाईआ ।
 मानस जन्म जाए जन जित,
 जिस बखशे सच्च सरनाईआ ।
 दरस दखाए नित्त नवित्त,
 रसना जो जन गाईआ ।
 सरब जीआं प्रभ साचा पित,
 पिता पूत वेख वखाईआ ।
 अबिनाशी करता एका अचुत्त,
 ना मरे ना जाईआ ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 आप आपणी जोत धर,
 खेले खेल नित नवित्त,
 खेलणहार बेपरवाहीआ ।



* *

* ४३ *



जिस मिल्या गुर पारब्रहम,
उत्तरे रोग संताप ।
पूरन काज करे काम,
पुरख अबिनाशी साचा बाप ।
लेखे लाए दमा दम,
जो जन गाए रसना जाप ।
जगत बुझाए तृष्णा तम,
दरस दखाए आपणा आप ।
जगत दुवारा देवे डंन,
वड वड्डा घर प्रताप ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी जोत धर,
पत रक्खे कमलापात ।



* ४४ *



भिंनडी रैण चढया चा,
सतगुर पुरख मनाया ।
सतगुर पूरा मिल्या इक मलाह,
गुरसिख साजण वेख वखाया ।
दोहां बहाए एका थां,
एका दर खुलाया ।
कलजुग करे सच्च निआं,
जगत झेड़ा मेट मिटाया ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर,
भिंनडी रैण मेल मिलाया ।



* ४५ *



हरि सतगुर साचा मीतड़ा,
पारब्रहम करतार ।
गुर गुर चलाए आपणी रीतड़ा,
परगट होए विच संसार ।
गुरमुखां लग्गे भाणा मीठड़ा,
इक वसाए ढंडा दरबार ।
गुरसिख कराए पतत पुनीतड़ा,





पतित पावण किरपा धार ।
मनमुख काया कौड़ा होया रीढड़ा,
चारों कुंट होए खुवार ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी जोत धर,
खेले खेल अगम्म अपार ।



* ४६ *

भिन्नड़ी रैण उट्टी जाग,
हरि संगत नाल जगाईआ ।
हँस बणदे वेखे काग,
मुक्ख तो आपणा परदा लाहीआ ।
घर विच घर दीपक जगदे वेखे चिराग,
आपणा अंधेरा रही मिटाईआ ।
सतगुर पूरा गुरमुखां धोवण आया दाग,
भिन्नड़ी रैण नाल रलाईआ ।
हरि संगत तेरे वड्डु वड्डु भाग,
धरत धवल खुशी रही मनाईआ ।
भिन्नड़ी रैण सरन सरनाई गई लाग,
दोए जोड़ बैठी सीस झुकाईआ ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर,
आप आपणी दया कमाईआ ।



* ४७ *

जपो सोहँ मन आत्म सुख ।
जपो सोहँ ना विआपे दुःख ।
जपो सोहँ मिले प्रभ भूप ।
जपो सोहँ पेखो दरस अनूप ।
जपो सोहँ प्रगटे जोत सरूप ।
जपो सोहँ मिले महाराज शेर सिंघ विच अंध कूप ।

* ४८ *



सरब सुख गुरचरन प्यार ।
सरब सुख गुर रिदे चितार ।
सरब सुख गुर संगत प्यार ।
सरब सुख महाराज शेर सिंघ रिदे चितार । * *



* ४९ *



सोहँ शब्द उत्तम ज्ञान ।
 बूझे सो जो पुरख सुजान ।
 पावे सो जिस गुर चरन ध्यान ।
 गावे सो जिस प्रभ देवे दान ।
 धारे सो जिस प्रभ दए दयावान,
 दरसारे सो जिस प्रभ होए मेहरवान ।
 पावे सो जिस महाराज शेर सिंघ दरस दिखान ।

* ५० *



दरस दिखावे प्रभ अबिनाशी ।
 रिद्ध सिद्ध प्रभ चरन दी दासी ।
 सरब वस्तुया सरब घट वासी ।
 कलजुग प्रगटी जोत अबिनाशी ।
 जगत सारा सदा विनासी ।
 गुरसिख गुरचरन रैहरासी ।
 जगे जोत होवे आत्म प्रकाशी ।
 महाराज शेर सिंघ गुर सतगुर पूरा,
 सरब सुख गुरचरन निवासी ।

* ५१ *

गुरचरन उपजे ब्रहम ज्ञाना ।
 गुरचरन सरब रस माणा ।
 गुरचरन प्रभ दर्शन पाणा ।
 महाराज शेर सिंघ गुर सतगुर पूरा,
 कलजुग जोत जगाए महाना ।

* ५२ *

साचा प्रभ सच्च घर पाओ ।
 साचा प्रभ रिदे वसाओ ।
 साचा प्रभ सोहँ साचा जोग कमाओ ।
 साचा प्रभ अबिनाशी सदा रसना गाओ ।
 साचा नाम साचा जाम,
 पी आत्म तृपताओ ।
 सरब नाम साचा काम,
 रसना हरि गुण गाओ ।





साचा नाम साचा शाम,
प्रभ आबिनाशी घर में पाओ ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
कलजुग जीव भुल्ल ना जाओ ।



* ५३ *

साचा नाद प्रभ वजाए ।
आत्म सुन्न खोलू वखाए ।
एका धुन आप उपजाए ।
गुरमुख चुण प्रभ चरन लगाए ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
सरन पड़े दी लाज रखाए ।

* ५४ *



सरब कला प्रभू भरपूर ।
देही दुखड़े कीते दूर ।
आत्म सुख उतरे भुख,
प्रभ साचा दिसे हजूर ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
सरब जना दी आसा पूर ।



* ५५ *

गुर चरन प्रीती साचा जोग ।
गुरमुख साचे आत्म रस भोग ।
देवे दरस प्रभ अमोघ ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
आत्म कट्टे हौंमे रोग ।

* ५६ *



गुरमुख साचे धाम न्यारा ।
पारब्रहम खेल न्यारा ।
एका जोत जगे गिरधारा ।
गुरमुख विरला वेखे कर विचारा ।
जोत सरूप जोत निरंजण,
निहकलंक नरायण नर अवतारा ।



* *

* ५७ *

सोहँ नाम सदा खुमारी ।
 गुरमुख आत्म होए उजियारी ।
 अमृत वरखे प्रभ साचा किरपा धारी ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 देवे दरस सच्चखंड दुवारी ।



* ५८ *

गुरसिख मंग दरस दान ।
 देवे दरस विष्णु भगवान ।
 सोहँ देवे नाम बबान ।
 रसना जप जप जीव,
 आत्म जोत जगे महान ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 जोत सरूपी मेल मिलाण ।



* ५९ *

गुरसिख मंग मन हरि का रंग ।
 गुरसिख मंग सद गुरचरन का संग ।
 गुरसिख मंग जरम ए माणस होए ना भंग ।
 गुरसिख मंग गुर दर शब्द सोहँ ।
 गुरसिख मंग महाराज शेर सिंघ चरन का संग ।

* ६० *

रसना हरि हरि साचा गौणा,
 बत्ती दंद हिलाईआ ।
 अंतर आत्म एका पौणा,
 एका वज्जे वधाईआ ।
 जूना झूना काया कप्पड़ लौहणा,
 शब्द दोशाला तन हंढाईआ ।
 खिमां गरीबी झोली पौणा,
 याचक दान जो मंग मंगाईआ ।
 काल महाकाल नेड़ ना औणा,
 प्रितपाल हत्थ वडिआईआ ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 आप आपणी जोत धर,
 गरीब निमाणे गले लगाईआ । * *



* ६१ *

गरीब निमाणयां पकड़े बांह,
 शब्दी शब्द सहारा ।
 सखा सुहेला पिता मां,
 मेल मिलाए पूत सपूत सुत्त दुलारा ।
 फड़ फड़ हंस बनाए कां,
 जिस जन बख्शे चरन प्यारा ।
 पुरख अबिनाशी देवे ढंडी छां,
 अंत ना पारा वारा ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 आप आपणी जोत धर,
 हरिजन बेड़ा जाए तार,
 पार कराए कल सागर डूंची गारा ।

* ६२ *

सतगुर पूरा रक्खे पत,
 पतिपरमेशवर आप अखवाया ।
 लेखे लाए हड्डि मास नाड़ी रत्त,
 आप आपणी दया कमाया ।
 नाम बीज बीजे साचे वत्त,
 काया मंदर फोल फुलाया ।
 धीरज संतोख देवे सत,
 सतवाद आप उपजाया ।
 एका उपजे हरि प्रीत,
 पारब्रहम वेख व्वाया ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 आप आपणी जोत धर,
 सिर आपणा हत्थ टिकाया ।

* ६३ *

पीया प्रीतम हरि निरंकार,
 परम पुरख अख्वाया ।
 हरिजन साचे करे प्यार,
 लोकमात मेल मिलाया ।
 चरन कँवल नाता विच संसार,
 पुरख बिधाता जोड़ जुड़ाया ।

जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी जोत धर,
सीस जगदीश आपणे हत्थ रखाया ।



* ६४ *

सतगुर सज्जण पूरा मीत,
चरन कवल बख्शो प्रीत ।
काया करे ढांडी सीत,
देवे नाम सच्च अनडीढ ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
गुरसिख साचे सदा मन चीत ।

* ६५ *

आत्म धार मिल्या सुख,
सुख सतगुर चरन हज़ूर ।
आत्म तृष्णा मिटी भुक्ख,
हौमे हंगता होई दूर ।
उज्जल होया मात मुख,
अंदरो तुटा गढ गरूर ।
सुफल होई मात कुख्व,
सतगुर मिल्या सरब कला भरपूर ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
चरन प्रीती बख्शो धूढ ।



* ६६ *

सरब कला प्रभ भरपूर,
देही दुखड़े कीते दूर ।
आत्म सुख उतरे भुख,
प्रभ साचा दिसे हज़ूर ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
सरब जनां दी आसा पूर ।

* ६७ *

सतगुर तेरा साचा दरस,
जन्म मरन दी मिटे हरस ।
रावी कन्ढे अमृत बरस,





गुर अरजन दी पूरी करे हरस ।
 भगत भगवान दी लग्गी शरत,
 जिनां पिच्छे आइओं परत ।
 दे वडिआई उतते धरत ।
 घर सुहावणा उतते अरश ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 गरीब निमाणयां मन्नी अरज़ ।



* ६८ *

सतगुर साचा धुर दा सज्जण,
 चरन धूड़ी कराए मजन ।
 जन भगतां आए पैज रक्खण,
 धुर दा नाम अगम्मा दस्सण ।
 हिरदे अंदर आए वसण,
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 सच्च दुआर वखाए आपणा पत्तन ।



* ६९ *

सतगुर शब्द करे मेहरवानी,
 मेल मिलाए शाह सुलतानी ।
 मंज़ल बख़शे सच्च रुहानी,
 जोत जगाए घर नूर नुरानी ।
 पंध चुकाए ज़िमी असमानी,
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 भगत जनां दा बणया बानी ।



* ७० *

लग्गे भोग हरि निरंकार दा ।
 गुरमुख दर घर आए,
 अंतम कलजुग तारदा ।
 आप पछाणे थाओं थाई,
 ऊच नीच ज़ात पात वरन गोत ना कोई पछाणदा ।
 आप वसाए साचे थांए,
 जिथ्थे कोई जाए नाहीं ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 अंतम अंत पार लंघाए,



दरगह साची माण दवाए,
विख पाप सरख उतारदा ।



* ७१ *

लग्गे भोग सतजुग सरदार दा ।
दस्से साची जुगत,
मानस जन्म सुवारदा ।
अंतम मिलदी मुक्त,
जो जन हरि हरि रसन उचारदा ।
जोती जोत सरूप हरि,
कर किरपा पार उतारदा ।

* ७२ *

इक रक्खणा चरन ध्यान ।
रक्खणी ओट श्री भगवान ।
शब्द गौणा खिच कमान ।
नेतर बंद करौणा,
कन्न ना सुणना कोई शब्द अंध अधियान ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
प्रगट होए जोत सरूपी वड्डु मेहरवान ।



* ७३ *

चरन धूड़ी साची नहाओ ।
सोहँ शब्द रसना गाओ ।
परम पुरख पतिपरमेशवर,
प्रभ अबिनाशी साचा पाओ ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
घर जाए भुल्ल ना जाओ ।

* ७४ *

गुरसिख झूठ कदे ना बोले ।
प्रभ अबिनाशी पूरे तोल तोले ।
आप वसे काया चोले ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
गुर संगत साचा माण दुआया,
आपणी चरनी आपे लाया,
सदा वसे कोल कोले । * *



* ७५ *

साची देवे नाम दवाई ।
 गुरमुख साचे रसना खाई ।
 काया रोग सरब मिटाई ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 अढे पैहर रसन ध्याई ।



* ७६ *

सोहँ नाम तेरी वडिआई ।
 ईश जीव इक्क हो जाई ।
 सोहँ सो प्रभ निरंजण रघुराई ।
 आपणा खेल आप वरताई ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 आपणा भेव देवे आप खुलाई ।



* ७७ *

काया मंदर भगत दवार ।
 भगत दवार अर्मत भंडार ।
 अर्मत भंडारी दस्म दवार ।
 दस्म दवारी जोत निरँकार ।
 जोत निरँकारी शब्द धार ।
 शब्द धारी पवन असवार ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 गुरमुखां खोले बंद कवाड़ ।

* ७८ *

प्रगट होया आप भगवान ।
 गुरसिखां नूं दित्ता ज्ञान ।
 सोहँ शब्द है महान ।
 सिमरे जीव पाप लैह जाण ।
 कुम्भी नरक सिख ना जाण ।
 आदि अंत प्रभ विच समाण ।
 आवण जावण दा पंध मुकाण ।
 विच चुरासी चोटां ना खाण ।
 सोहँ शब्द मेरा नाम पछाण ।
 महाराज शेर सिंघ दिता ज्ञान । * *



* ७९ *

बण भिखारी आओ दर ।
 सोहँ देवे प्रभ साचा वर ।
 खाली भन्डारे देवे भर ।
 आप तुड़ाए आत्म जिंदरा दर ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 आपे अंदर बैठा वड़ ।



* ८० *

आस पास सद वसेरा ।
 प्रभ अबिनाशी नेरन नेरा ।
 शब्द सरूपी पाए घेरा ।
 आप तुड़ाए जम का जेड़ा ।
 बिन गुर पूरे पार लंघावे केहड़ा ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 गुरमुखां बन्न वखावे बेड़ा ।



* ८१ *

साचा जोग चरन ध्यान ।
 आत्म जोत जगे महान ।
 किरपा करे आप भगवान ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 सोहँ साचा देवे दान ।

* ८२ *

साचा जोग जन कमाए ।
 सोहँ नाम रसना गाए ।
 आत्म तृखा सरब मिटाए ।
 प्रभ अबिनाशी कल में पाए ।
 निज घर वासी प्रभ नज़री आए ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 प्रगट जोत दरस दिखाए ।



* ८३ *

तू तू कर पुकारदी ।
 प्रभ अबिनाशी किरपा कर,

२६



तू तू वाजां मारदी ।
आपणी जोत आत्म धर,
मेरी काया औगणहार दी ।
शब्द भंडारा भर,
मैं दुहागण नार संसार दी ।
चरन वणजारा बण कर,
मंगी एका सिक्क तेरे दीदार दी ।
जन्म करम पार उतारा कर,
गुण अवगुण मन मत्ती ना विचार दी ।
साचा शब्द साचे घर आधारा कर,
रक्खो लाज चरन प्यार दी ।
साचे घर शब्द जैकारा कर,
मिटे रैण अंधेरी धुंदूकार दी ।
आपणा दीप उज्यारा घर साचे कर,
किरपा कर स्वच्छ सरूपी दरस अपार दी ।



* ८४ *

सोहँ साचा शब्द चलाया,
सोहँ साची धुन उपजाया ।
सोहँ आत्म सुन्न खुलाया,
सोहँ रसना जप जप जीव,
महाराज शेर सिंघ होए सहाया ।



* ८५ *

चरन प्रीती दान दे,
ढह पिआ दुवारे ।
दर आपणे साचा माण दे,
होए दरस अपारे ।
प्रभ पूरन ब्रहम ज्ञान दे,
आत्म दीप होए उज्यारे ।
गुर चरन प्रभ साचा ध्यान दे,
सीस झुके तेरे दरबारे ।
सोहँ शब्द धुन विच कान दे,
अनहद वज्जे विच देह अँध्यारे ।
सोहँ नाम सच्च पहनण खाण दे,
एक टेक होए प्रभ चरन दुवारे ।



महाराज शेर सिंह गुर सतगुर पूरा,
कर किरपा गुरसिख तारदे ।



* ८६ *

जीव माण ना कर,
जग सद नहीं रहणा ।
गुरसिखां गुर चरन ध्यान कर,
सच्च साध संगत विच बैहणा ।
विच देह प्रभ का वास कर,
छड्डु झूठे साक सैणां ।
महाराज शेर सिंह दुखां नास कर,
गुरसिख चरन लाग दुःख क्योँ सैहणा ।

* ८७ *

अमृत सीर पीदे जाणा,
तन सोहँ धागे सीन्दे जाणा ।
दैह दिशा भौदा फिरे मन,
गुरसिख साचे गुरचरन बैहन्दे जाणा ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
साचा जाम आप पिलाए,
साची दात झोली पाए,
दरगहि साची पीदे खांदे जाणा ।



* ८८ *

गुर का शब्द सच्च कमाणा,
आत्म विच ना हंकार रखाणा ।
गुर पीर ना आप अखवाणा ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
वेले भीड़ आप छुडाणा ।

* ८९ *

साची सिख्या सिख विचार,
दिवस रैन हरि रसन उचार ।
सोहँ साची शब्द धार,
आत्म लेखा ना रहे विच संसार ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
मरन जन्म दोए दए सवार । * *



* ९० *

हरि जोती नूर अपार,
गोबिंद विच समाया ।
गोबिंद शब्द अधार,
लोकमात वेख वखाया ।
जगत जगदीश कर प्यार,
सिंघ मनजीता सेवा लाया ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
पूरन जोती जोत जगाया ।



* ९१ *

मैं चिरी विछुन्नी रखी,
मिल सतगुर मीत मुरार ।
तेरा दर्शन पावां अँखीं,
मिटे अंध अँधियार ।
किते रुल ना जावां कख्वीं,
कीमत पावीं आपणे दुआर ।
सद चरनां दे विच रक्खीं,
बखशी साची धूड़ी शार,
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
आत्म परमात्म तेरा होए प्यार ।



* ९२ *

रसना रस आत्म रस पौणा,
प्रभ अबिनाशी ना मनो भुलौणा ।
घनकपुर वासी रिदे वसौणा,
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
साचा सतगुर सदा धिऔणा ।

* ९३ *

दरस दीआ गुर साचे आ के,
जोत सरूपी जामा पा के ।
पुरी घनक विच जोत प्रगटा के,
निहकलंक कल नांओं धरा के ।
झूठी काया आप तजा के,
साचा बाणा आप बणा के ।



भेख भेख भेख प्रभ साचा भेख वटा के,
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
जोत सरूपी दरस दिखा के ।



* ९४ *

किरपा कर किरपा कर किरपा कर ।
आत्म बुद्ध साची धर ।
भरम भउ सरब हर ।
जन्म करम सुफल कर ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
जो जन भुल्ल बख्शाए तेरे दर ।

* ९५ *

गुर पूरा करम विचारदा,
कर किरपा पार उतारदा ।
जन्म मरन दा काज सवारदा,
जो जन आए चरन निमस्कारदा ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
एका रंग साचे करतार दा ।



* ९६ *

घर मंदर मिले ढाकर सुवामी,
पीया प्रीतम अंतरजामी ।
सतगुर साहिब सदा निहकामी,
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
लख चुरासी गलों कट्टे गुलामी ।

* ९७ *

सतगुर सच्च मलाह है,
दो जहानां लावे पार ।
इक इकल्ला बेपरवाह है,
हर घट खेले खेल अपार ।
लख चुरासी कट्टे फाह है,
रोग सोग चिंत निवार ।
आपे पिता आपे मां है,
दिवस रैण पावे सार ।



जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर,
जिस जन देवे नाम अधार ।



* ९८ *

सतगुर पूरा करे तरस,
सिर सिर आपणा हत्थ टिकाँयदा ।
जन्म मरन दी मेटे हरस,
आसा मनसा पूर कराँयदा ।
दिवस रैण देवे दरस,
जागरत जोत डगमगाँयदा ।
प्रेम प्रीती मेघ बरस,
कूड़ तष्णा भुक्ख मिटाँयदा ।
होए सहाई उत्ते फरश,
अरश आपणा घर जणाँयदा ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर,
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
जुग जन्म दी मेटे तड़प
विछोड़ा अगला पंध मिटाँयदा ।



* ९९ *

मेहर नज़र नाल प्रभ तक्कदा,
दो जहानां सज्जण मीत ।
भेव खुलाए आपणी अक्ख दा,
शब्द सुणावे धुर दा गीत ।
परदा लाहवे साचो सच्च दा,
बख्खणहारा चरन प्रीत ।
जो भगतां अंदर वस्सदा,
सो परखणहारा नीत ।
लक्ख चुरासी विचो रक्खदा,
काया चाढ़ के रंग मजीढ ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर,
करे खेल साचा हरि,
वखणहारा धाम अणडीढ ।



* १०० *

सतगुर तेरी साची ओट,
हऊमे विचो कढ दे खोट ।
सच्च नाम दी ला दे चोट,
लेखा मुक्के जन्म कोटी कोट ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
आलणिओं डिगो उडा लै बोट ।



* १०१ *

प्रगट होया आप भगवान,
गुरमुखां नूं दिता ज्ञान ।
सोहँ शब्द है महान,
सिमरे जीव पाप लह जाण ।
कुंभी नरक सिख ना जाण,
आदि अंत प्रभ विच समाण ।
आवण जावण दा पंध मुकाण,
विच चुरासी चोटां ना खाण ।
सोहँ शब्द मेरा नाम पछाण,
महाराज शेर सिंघ दिता ज्ञान ।



* १०२ *

दुःख देह तन कर दूर ।
दान बखशे जीव चरन धूढ़ ।
हड्ड मास नाड़ी पिंजर टुट होया चूर ।
दुःखां बरखा जिओं निम्मी भूर ।
महाराज शेर सिंघ किरपा कर,
देही दुःख कर जा दूर ।

* १०३ *

उत्री सौ पचवजा बिक्रमी होई,
बाबे मनी सिंघ नूं सोझी होई,
नीला चोला आप रंगाया ।
महाराज शेर सिंघ दे गल विच पाया ।
नाल संगत लै लई सारी ।
अनंदपुर दी करी तैयारी ।
पुर अनंद पहुँचे आ के ।



जिथ्थे गोविंद सिंघ गिया गुआ के ।
 सानू बाबे सीस उढाया ।
 विच शहर दे हुक्म सुणाया ।
 निहकलंक अवतार जे आया ।
 करो दरस मुखो सुणया ।
 मुसलमानो सुण लओ भाई ।
 एह अमाम मैहन्दी जिन चोली पाई ।
 आपणा भरम मिटाओ आ के ।
 सरनी एहदी लग्गो आ के ।
 राम कृष्ण दा एह अवतार ।
 महाराज शेर सिंघ दीन दयाल ।

* १०४ *

घर साचा आप सुहा दे,
 सोभावंत सुलतान ।
 पुरख अबिनाशी जोत जगा दे,
 अंध अंधेरे होए ज्ञान ।
 अनहद नादी नाद वजा दे,
 धुर दी शब्द सुणे धुनकान ।
 घर मंदर इक रुशना दे,
 जोती जोत हो प्रधान ।
 अमृत अगग्मा जाम पिआ दे,
 तीरथ मुक्के जगत जहान ।
 इक्को आपणा नाम दृढ़ा दे,
 करनी पए ना अक्खरां वाली कल्याण ।
 जजमान हो के मरासी डूमा आपणी खैर पा दे,
 गुरमुख मंगण जाण ना किसे दुकान ।
 जुग जनम दे विछड़े आपणी गोद बिढा दे,
 निरगुण निरगुण कर प्रवान ।
 पिछले कर्म कुकर्म मिटा दे,
 आद जुगाद बण मेहरवान ।
 दुःख भंजन भव सागर पार करा दे
 कुदरत दे मालक हो के दयावान ।
 डुब्बदे पत्थर पार लंघा दे,
 कलजुग हो के निगाहबान ।
 जगत शरअ कूड़ जंजीर तुड़ा दे,



तेरे करम पवे नीसाण ।
 माटी चंमड़े लेखे ला दे,
 तेरे चरनी डिग्गे आण ।
 लक्ख चुरासी फंद कटा दे,
 झगड़ा रहे ना आवण जाण ।
 सच्चखंड दुवार बहा दे,
 जिस घर वस्सण भगत सुजाण ।
 पूरब विछड़े मेल मिला दे,
 सतजुग तरेता दुआपर कलजुग अंत कर कल्याण ।
 निरगुण जोती जोत मिला दे,
 पंज तत्त लेखा रहे ना विच जहान ।
 आपणे दर सच्चखंड दवार बहा दे,
 जिथ्थे पुज्जे ना कोई इन्सान ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 आप आपणी किरपा कर,
 कलजुग गुरुआं कोलो खैहड़ा छुडा दे,
 गुरुमुख इक्को वार करन ब्यान ।



* १०५ *

घनक पुर वासी तेरीआं बेपरवाहीआं ।
 चारो कुंट उठ उठ वेखण,
 करदा जाए सरब सफाईआ ।
 गुरसिख लैणा वेख,
 पुत्तरां छड्डण माईआं ।
 प्रभ जोत सरूपी धारे भेख,
 आप भुलाए जांन्दआं राहीआं ।
 ना कोई जाणे औलिया पीर शेख,
 ऊची कूकण देण दुहाईआं ।
 धुरदरगाही साचा माही
 माझे देस लाए मेख,
 ना सके कोई हिलाईआ ।
 साचा लेख सच्च लिखाए,
 बेमुखां पाए फाहीआं ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 वड्ड दाता बेपरवाहीआ ।



* *

* १०६ *

साचा शब्द गुरुमुख कमावे ।
 मनमुख मूढ ना रिदे वसावे ।
 कर कर हासी दर दुःख जावे ।
 भरमत भरमत बहु दुःख पावे ।
 गुरसिख साचा चरन प्रीत लगावे ।
 रसना जप सोहँ नाओं,
 जोत सरूपी मेल मिलावे ।
 महाराज शेर सिंघ देवे साचा थाओं,
 मातलोक गुरसिख ना आवे ।

* १०७ *

दए वडिआई चार जुग,
 जग मिलण वधाईआं ।
 धनं धनं धनं गुर संगतां,
 गुर दर ते आईआं ।
 रिख मुन जाएण मन्न,
 बहत्तर भगत प्रभ जोत जगाईआं ।
 लिखत कराए होए परसनं,
 रसना देवे भगत वडिआईआं ।
 धनं धनं धनं गुरसिख,
 निहकलंक संग प्रीतां लाईआं ।
 महाराज शेर सिंघ उत्तम दरस,
 कर दरस सभ भुक्खां लाहीआं ।

* १०८ *

साचा घर तेरा वसे गुरसिख ।
 वेला हत्थ ना आए,
 वड वड बैढे मुन रिख ।
 साचा घर मंगण कोई विरला आए,
 एथ्थे पए नाम भिख ।
 गुरमुखां घाल पाए थाए,
 मिटाए आत्म तृख ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 सोहँ साचा शब्द ज्ञान दवाए,
 गुरसिखां लैणां सिख ।

* १०९ *

गुरसिख तेरी आत्म गांदी,
 शब्द डोरी हरि की बांदी ।
 गुर पूरा विच फसाया,
 बण गया साचा फांदी ।
 हिरदे विच वसाया,
 ढाई भरमां कांधी ।
 फेर आपणा दर बंद कराया,
 ना छुट्टे भगतां बांधी ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 साचे घर सुहन्जणी रैण अज्ज आंदी ।

* ११० *

जै जैकार होए त्रैलोए ।
 मातलोकी हाहाकार,
 सुणे पुकार ना कोए ।
 पुरख अबिनाशी जामा धार,
 जोती नूर होए ।
 धरत मात तेरे काज सवार,
 दर दवारे आण खलोए ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 निहकलंक नरायण नर ।
 सत मनी सिंघ दिता वर,
 एका एक जगत टेक,
 वरन गोत रहे ना कोई ।

* १११ *

दया कर दीन के दाते,
 आए दर मिले वर पुरख बिधाते ।
 आत्म खोलू साचा सर,
 अठसठ तीरथ झूठे नहाते ।
 एका जोती एका शब्द,
 एका सुरत एका घर,
 मिटे अंधेरी राते ।
 जोती जोत सरूप हरि,
 अठे पहर एक रंग रंगाए,
 ना सोए ना जागे किस वले प्रभाते । * *

* ११२ *

चरनी सीस निवाई जा ।
 रसना नाल गाई जा ।
 हिरदे विच वसाई जा ।
 हौमे रोग गुवाई जा ।
 आत्म जोत जगाई जा ।
 अज्ञान अंधेर मिटाई जा ।
 स्वच्छ सरूपी प्रगट होया,
 दर घर साचे दर्शन पाई जा ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 रसना नाल ध्याई जा ।

* ११३ *

महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 निहकलंक देह तजाई ।
 अग्नि भेट आप चढ्वाई,
 मात पिता ना कोई रखाई,
 गुरमुख साचे विच जोत टिकाई ।
 ना कोई भाई ना कोई भैण,
 ना कोई दिसे धी जुवाई ।
 एका गुर संगत तेरी चरन प्रीती, प्रभ साचे भाई ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 प्रगट जोत मिलण आया साचा माही ।

* ११४ *

झोली भर भर लेंदे जाओ ।
 खुशीआं नाल बैठे खाओ ।
 एथे वक्त सुहेला होया,
 साध संगत दा मेला होया,
 अगगे फल साचा खाओ ।
 आपे गुर आपे चेला होया,
 दोवे रल मिल इक्क थां बैह जाओ ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 सारे रल मिल रसना गाओ ।

* *

* ११५ *

आत्म तेरी सद सुहागण ।
 गुरमुख साचे प्रभ दर जागण ।
 चरन सेव हरि साची लागण ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 सोहँ शब्द उपजावे साचा रागण ।



* ११६ *

प्रभ साचे लिया जगत अवतार ।
 तीन लोक होई जै जैकार ।
 कलजुग जीव सुत्ते पैर पसार ।
 गुरमुखां होई आत्म उज्यार ।
 सुर नर आए प्रभ दरबार ।
 फुल्ल बरसावण बरखा धार ।
 एका जोत जगी निरंकार ।
 महाराज शेर सिंघ सतगुर साचा,
 घनकपुरी लए अवतार ।



* ११७ *

घनकपुर प्रभ जामा धारे ।
 देव देवीआं फिरन दुवारे ।
 साचा संत साची मारे लकारे ।
 ना दिसे दर ना दरबारे ।
 दुखी होए फिरन दुख्यारे ।
 अरचा पूजा प्रभ पार उतारे ।
 महाराज शेर सिंघ सतगुर साचा,
 जामा घनकपुरी विच धारे ।

* ११८ *

प्रभ की महिमा जिस जन गाई ।
 मातलोक विच मिली वडिआई ।
 साचा प्रभ होए सहाई ।
 गुरमुख साचे भुल्ल ना जाई ।
 मदिरा मास ना रसना लाई ।
 आपणी कीती ना आप गुंवाई ।
 महाराज शेर सिंघ सतगुर साचा,
 सब थाई होए सहाई । * *



* ११९ *



गुरमुख साचे तेरा साचा घर ।
 प्रभ अबिनाशी एका दर ।
 एका जोत मिलाए अवतार नर ।
 महाराज शेर सिंघ सतगुर साचा,
 चरन लाग जग गया तर ।



* १२० *

प्रभ साचा सिर रक्खे हत्थ ।
 सोहँ शब्द चलाए साचा रथ ।
 प्रभ दी महिमा बड़ी अकक्थ ।
 गुरमुख विरला पाए साची वथ्थ ।
 महाराज शेर सिंघ सतगुर साचा,
 भगत जनां सिर रक्खे हत्थ ।

* १२१ *



घड़ी विछोड़ा पाई ना,
 चरनो परे हटाई ना,
 आत्म हंकार वकार चलाई ना,
 विच संसार झूठी माया जाल वछाई ना ।
 एका देवी शब्द अधार,
 भरम भुलेखे गुरमुखां भुलाई ना ।
 फड़ फड़ बाहो लाई पार,
 दे धक्का जगत वैहण वहाई ना ।
 आत्म अंधे ना दिसे कोई किनार,
 दर साचे हरि दुरकाई ना ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 अंतम वेला तेरा आया ।
 गुरसिख निमाणा गरु गरीब,
 आत्म विचों भुलाई ना ।



* १२२ *



सोहँ साचा शब्द चलाया ।
 साचे प्रभ रसन अलाया ।
 सतिजुग तेरी झोली पाया ।
 जगत भंडारी सरब वरताया ।





सतजुग जीवां विच वसाया ।
 आत्म विकार नष्ट कराया ।
 हंकार निवारी प्रभ अखवाया ।
 सांतक रूप होए विच समाया ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 निहकलंक कल जामा पाया ।



* १२३ *

वड दाता वड दयावान ।
 किरपा करे आप भगवान ।
 सोहं साचा देवे माण ।
 रसना जीव आत्म तृप्तान ।
 जोत सरूप देवे दरस,
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान ।



* १२४ *

चरन सेव जो जन कमाए ।
 कर किरपा प्रभ पार कराए ।
 साची बख्शे प्रभ सरनाए ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 गुरसिख सेवा सुफल कराए ।



* १२५ *

गुरमुखां करे बंद खुलासी ।
 देवे दरस घनकपुर वासी ।
 गल्लो कटाए जम की फासी ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 चरन तेरे सच्चि रहरासी ।

* १२६ *

जो जन आए प्रभ सरनाए ।
 प्रभ अबिनाशी होए सहाए ।
 आत्म साची जोत जगाए ।
 जोत सरूपी दरस दिखाए ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 आप आपणा भेव खुलाए । * *



* १२७ *

सोहें शब्द प्रभ देवे दात ।
 सोहें देवे प्रभ साची करामात ।
 सोहें शब्द करे प्रकाश ।
 जिओं दीपक अंधेरी रात ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 जन भगतां देवे साची दात ।



* १२८ *

सरब जना प्रभ आसा पूर ।
 जो जन आए चरन हजूर ।
 सोहें साचा देवे नाम सरूर ।
 प्रभ अबिनाशी आत्म करे भरपूर ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 गुरमुख हिरदे वसे ना जाणो दूर ।



* १२९ *

निहकलंकी शब्द अनमोला ।
 पहिलो छड्डुआ काया चोला ।
 फेर सुणाया सोहें ढोला ।
 भरम भुलेखा गुरमुख साचे संतां आत्म खोल्ला ।
 मेल मिलावे साचे कंता,
 होया जगत विचोला ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 निहकलंक नरायण नर,
 अवतार चवीआं वर
 मातलोक लक्ख चुरासी खेलण आया एका अंतम होला ।

* १३० *

साचे लंगर भोजण पाओ ।
 तन दे संगल सरब कटाओ ।
 परमानंद विच समाओ ।
 निजानंद सद रस पाओ ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 हस्स हस्स राह दस्स दस्स
 गुरसिखां राहे पाओ । * *



* १३१ *

आत्म तीरथ कर इशानान,
सोहँ मिले साचा दान ।
रसना गौणा हरि भगवान,
महाराज शेर सिंघ सतगुर साचा ।
सरब जीआं दा जाणी जाण ।



* १३२ *

दोवें भुजां हरि फुलाए,
गुरसिख साचे संत सहेलड़ओ,
आओ मिलो प्रभ गल लाए ।
धुरदरगाही साचे चेलड़ओ,
क्यों बैठे मुख भुवाए ।
हरि साचे दे लाल अलबेलड़ओ,
आओ प्रभ आपणी गोद जुटाए ।
ना रहो मात अकेलड़ओ,
शब्द लोरी दे हरि आप वरचाए ।
अचरज खेल पारब्रहम कल खेलड़ओ,
बण जाओ भैण भराए ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
दे मत्ती आप समझाए ।



* १३३ *

जो जन आए प्रभ चरन दुवारया ।
मानस जन्म कल सुआरया ।
आत्म दुःख प्रभ निवारया ।
सांतक सुख प्रभ वरता रिहा ।
रोग भुक्ख प्रभ गुवा रिहा ।
मात कुक्ख सुफल करा रिहा ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
चरन आए जिस सीस निवा लिआ ।



* १३४ *

गुरमुख मंगे साची मंग ।
प्रभ आत्म चाढ़े साचा रंग ।
मानस जन्म ना होवे भंग ।

भवजल जाए पार लंघ ।
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
सदा सहाई अंग संग ।



* १३५ *

गुर संगत खुशी मनौंदी जाणा ।
पुरख अबिनाशी रसना नाल
धऔंदी जाणा ।
आवण जावण जम्मण मरन चुक्के डर,
साची तरनी जाणा तर,
गुर पूरे चरन नेह लौंदी जाणा ।
किरिआ करम धरनी धर,
जन भगतां देवे साचा वर,
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
सोहँ जैकारा रसना नाल लगौंदी जाणा ।



* १३६ *

सोहँ शब्द नाम अनमोला ।
पुरख अबिनाशी अंतम कल,
आपे बणया मात तोला ।
ना कोई करे वल छल,
चार वरन सुणाए एका ढोला ।
प्रभ का भाणा ना जाए टल,
सच्च दुआरा एका खोला ।
ना जनमे ना जाए मर,
ना कोई परदा ना कोई ओहला ।
हरिजन हरि सरनाई जाए पड़,
महाराज शेर सिंह विष्णु भगवान,
काया मंदर अंदर साचे चोला ।

* १३७ *

सोहँ शब्द अजपा जाप ।
हौमे मारे विच्चों ताप ।
कोटन कोट उतारे पाप ।
लोकमात वड प्रताप ।
जोती जोत सरूप हरि,



आप अपनी किरपा कर,
दरस दिखाए आपे आप ।



* १३८ *

नाम विचोला जगत बणाउणा ।
सोहँ ढोला साचा गौणा ।
पुरख अबिनाशी वसे कोल,
अंदर बैढ दर्शन पौणा ।
भाग लगाए काया चोला,
सद सुहेला रिहा मवल,
गीत गोविंद रसना गौणा ।
भगत वडिआई उपर धवल,
खिड़आ रहे फुल कँवल,
निझर झिरना इक झिरौणा ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर,
एका देवे नाम वर,
नेतर अंजण नाम निरंजण,
दर दुवारे साचा पौणा ।



* १३९ *

गुण गौणा गैहर गंभीर ।
मन बांडा शांत सरीर ।
आपे देवे आत्म धीर ।
जोती जोत सरूप हरि,
आप आपणी किरपा कर,
मुख चुवाए अमृत साचा सीर ।

* १४० *

साचा प्रभ लाजावंत ।
रक्खे लाज आप भगवंत ।
गुरमुख साचे प्रभ साचा तेरा कंत ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
जिस बणाई तेरी बणत ।



* *

* १४१ *

आत्म बख्शे प्रभ सचच चरन प्रीती ।
 आत्म तेरी सदा अतीती ।
 जीवण जुगती साची मुक्ती ।
 प्रभ साचे दी साची रीती ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 गुरमुख तेरी काया सीतल कीती ।



* १४२ *

साचा प्रभ आप करतार ।
 साचा प्रभ वड्ड दातार ।
 साचा प्रभ सद निराहार ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 जन भगतां तारनहार ।

* १४३ *

दुःख दर्द तन खाए ।
 मूंह से निकले हाए हाए ।
 अंग अंग बध्धा ना कोए छुडाए ।
 औखध दारू सचच लध्धा,
 सोहँ नाम रसना गाए ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 आप आपणी दया कमाए ।



* १४४ *

साचा शब्द जन कमाओ ।
 रसना जप जप आत्म रस पाओ ।
 प्रभ साचा हो जाए वस,
 निजानंद निज मांह उपजाओ ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 बेमुख होए भुल्ल ना जाओ ।



* १४५ *

गुरसिख तेरा काज सुवारआ ।
 कर किरपा पार उतारआ ।
 जो जन आए चरन निमस्कारआ ।

गुण अवगुण ना प्रभ विचारआ ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
तेरे आत्म भरे भंडारआ ।



* १४६ *

जो जन आए गुर दरबारे ।
किरपा करे प्रभ गिरधारे ।
रोग सोग प्रभ आप निवारे ।
दरस अमोघ देवे गिरधारे ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
कर किरपा पार उतारे ।

* १४७ *

जोत निरंजण पूजन जोग ।
हौमे विचों कट्टे रोग ।
सोहें देवे साचा जोग ।
गुरमुख साचे प्रभ साचा,
आत्म मिटावे चिंता सोग ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
जोत सरूपी प्रगट जोत,
दर घर आए लगाए भोग ।



* १४८ *

रसना गाए एका हरि ।
गुरमुख साचा जाए तर ।
होए सहाई अवतार नर ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
आप दुवाए साचा दर ।

* १४९ *

गुरसिख तेरा काज सवारया ।
कर किरपा पार उतारया ।
जो जन आए चरन निमस्कारया ।
गुण अवगुण ना प्रभ विचारया ।
महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
तेरे आत्म भरे भंडारया । * *



* १५० *

होया वियाह रच्या काज ।
 साचा शब्द लै जाणा दाज ।
 मिले धुरदरगाही साचा राज ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 आपे रक्खे गुरसिखां लाज ।



* १५१ *

किरपा कर पार लंघाए ।
 वेले अंत आप छुडाए ।
 साचा कंत इक रघुराए ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 आप आपणे रंग रंगाए ।

* १५२ *

आत्म सेजा हरि विछाईआ ।
 उत्ते सुत्ता हरि रघुराईआ ।
 माया पड़दा इक रखाईआ ।
 बेमुखां दिस ना आईआ ।
 गुरसिखां आत्म वज्जे वधाईआ ।
 जिस दूई दवैती दूर कराईआ ।
 ना कोई शरअ ना हदाइती,
 ना कोई औखा मार्ग लाईआ ।
 महाराज शेर सिंघ विष्णु भगवान,
 सोहँ साचा इक्को राग,
 सभना सिर रक्खे वडिआईआ ।



* * * * *



